HISTORY

B.A.PART-II (Hon's)

Paper-III [History of India (1200-1526)AD]

Unit-III, (Lodhi Dynasty)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 52

"लोदी वंश (1451-1526)"

(Lodhi Dynasty)

बहलोल लोदी (1451 से 1489)

बहलोल लोदी दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक था। यह अफगानिस्तान के 'गिलजाई कबीले' की महत्वपूर्ण शाखा शाहू खेल में पैदा हुआ था। 19 अप्रैल 1451 को बहलोल 'बहलोल- शाह गाजी' की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा । अपने राज्याभिषेक के उपरान्त सुल्तान ने सम्भल, कोल, इटावा, रपरी, भोगाँव एवं मेवाड़ पर आक्रमण कर उनको अपने अधीन करने में सफल हुआ । इसके शासन काल की महत्वपूर्ण सफलता थी जयपुर का एक बार फिर दिल्ली राज्य में शामिल होना। जौनपुर पर अधिकार को लेकर बहलोल लोदी एवं जौनपुर के शर्की

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

सुल्तानों से लम्बा संघर्ष हुआ पर अंतत: सफलता बहलोल लोदी को मिली।

ग्वालियर पर किया गया आक्रमण सुल्तान का अन्तिम विजय अभियान था । वहां के शासक मान सिंह ने बहलोल को 80 लाख टंके दिये । ग्वालियर अभियान से वापस आते समय बहलोल बीमार पड़ गया। अन्ततः जलाली के समीप जुलाई 1489 में इसकी मृत्यु हो गई । बहलोल अपने सरदारों को 'मकसद-ए-अली' कह कर पुकारता था । वह अपने सरदारों के खड़े रहने पर खुद भी खड़ा रहता था । बहलोल लोदी ने 'बहलोल सिक्के' का प्रचलन करवाया ।

सिकन्दर शाह लोदी (1489 से 1517)

बहलोल लोदी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी निजाम खा 17 जुलाई, 1489 में 'सुल्तान सिकन्दर शाह' की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा । सिंहासन पर बैठने के उपरान्त सुल्तान ने सर्वप्रथम अपने विरोधियों में चाचा आलम खां, ईसा खां, आजम हुमायूँ (सुल्तान का भतीजा, तथा जालरा के सरदार तातार खां को परास्त किया। सिकन्दर लोदी ने जौनपुर को अपने अधीन करने के लिए अपने बड़े भाई बारबक शाह के खिलाफ अभियान किया जिसमें उसे पूर्ण सफलता मिली । जौनपुर के बाद सुल्तान सिकन्दर लोदी ने लगभग 1494 में बनारस के समीप हुए एक युद्ध में हुसैन शाह शर्की को परास्त कर बिहार को दिल्ली में मिला लिया। इसके बाद तिरहुत के शासक को अपने अधीन किया। राजपूत

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

राज्यों में सिकन्दर लोदी ने धौलपुर, मन्दरेल, उतगिरि, नरवर एवं नागौर को जीता परन्तु ग्वालियर पर सुल्तान अधिकार नहीं कर सका । 1504 में सिकन्दर लोदी ने आगरा नगर की नींव डाली । सिकन्दर शाह ने भूमि के लिए एक प्रमाणिक पैमाना 'गजेसिकन्दरी' का प्रचलन करवाया।

धार्मिक दृष्टि से सिकन्दर लोदी असहिष्णु था। इसने हिन्दू मंदिरों को तोड़ कर वहां पर मस्जिद का निर्माण करवाया । एक इतिहासकार के अनुसार सिकन्दर ने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तोलने के लिए दे दिया था। मुसलमानों को 'ताजिया' निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों के पीरों एवं सन्तों के मजार पर जाने पर सुल्तान ने प्रतिबंध लगाया। जीवन के अन्तिम समय में सुल्तान सिकन्दर शाह के गले में बीमारी होने से 21 नवम्बर, 1517 को उसकी मृत्यु हो गई। आधुनिक इतिहासकार सिकन्दर लोदी को लोदी वंश का सर्वाधिक सफल शासक स्वीकार करते हैं । सिकन्दर विद्या का पोषक था। उसके आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में 'फरहंगे सिकन्दरी' के नाम से अनुवाद हुआ। इसने आगरा को अपनी नई राजधानी बनाया।

इब्राहिम लोदी (1517 से 1526)

सिकन्दर लोदी के मरने के बाद अमीरों ने आम सहमति से इसके पुत्र इब्राहिम को 21 नवम्बर, 1517 को इब्राहीम शाह की उपाधि से आगरा

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

के सिंहासन पर बैठाया । सिंहासन पर बैठने के उपरान्त इब्राहिम ने आजम हुमायूँ शेरवानी को ग्वालियर पर आक्रमण करने हेतु भेजा । वहां के तत्कालीन शासक विक्रमजीत सिंह ने इब्राहिम की अधीनता स्वीकार कर ली । मेवाड़ के शासक राणा सांगा के विरुद्ध इब्राहीम का अभियान असफल रहा । राणा सांगा ने 'चंदेरी पर अधिकार कर लिया । इब्राहिम के भाई जलाल खा ने जौनपुर को अपने अधिकार में कर लिया था। इससे कालपी में 'जलालुद्दीन' की उपाधि के साथ अपना राज्याभिषेक करवाया था। इब्राहिम लोदी ने लोहानी, फारमूली एवं लोदी जातियों के दमन का पूर्ण प्रयास किया। जिससे शक्तिशाली सरदार असंतुष्ट हो गये । असंतुष्ट सरदारों में पंजाब का शासक दौलत खां लोदी एवं इब्राहिम लोदी के चाचा 'आलम खां ने काबुल के तैमूर वंश के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण दिया । बाबर ने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वह भारत आया। 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के मैदान में इब्राहिम लोदी एवं बाबर के मध्य हुए भयानक संघर्ष में लोदी की बुरी तरह हार हुई, अन्ततः उसकी हत्या कर दी गई । इब्राहीम की मृत्यु के साथ ही दिल्ली सल्तनत काल समाप्त हो गया । इस प्रकार बाबर ने भारत में एक नवीन वंश 'मुगल वंश की स्थापना की।

लोदी काल में वास्तुकला

बहलोल लोदी का मकबरा:- यह मकबरा 1418 में 'सिकन्दर लोदी' द्वारा बनवाया गया। 5 गुम्बदों वाले इस मकबरे के बीच में स्थित

Dr Guddy Kumari (A N D College)

गुम्बद की ऊँचाई सर्वाधिक है । इसके निर्माण में लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है।

सिकन्दर लोदी का मकबरा- इब्राहिम लोदी द्वारा यह मकबरा 1517 में बनवाया गया । मकबरे में निर्मित गुम्बद के चारों तरफ आठ खम्भों की छतरी निर्मित है । यह मकबरा एक ऐसी बड़ी चहारदीवारी के प्रांगण में स्थित है जिसके चारों किनारों पर काफी लम्बे बुर्ज हैं । मार्शल के अनुसार सम्भवतः इस शैली ने मुगल सम्राटो के विशाल उद्यान युक्त मकबरे का पथ प्रदर्शन किया। मुगल शैली को अपने विकास में इस मकबरे से महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

मोठ की मस्जिद- इस मस्जिद का निर्माण सिकन्दर लोदी' के वजीर द्वारा करवाया गया । मस्जिद की प्रशंसा में सर सैय्यद आहमद ने कहा कि 'यह लोदी स्थापत्य आकार में सुन्दर उपहार कृति है ।' मार्शल के अनुसार 'लोदियों की स्थापत्य कला में जो भी सबसे सुन्दर है उसका संक्षिप्त रूप मोठ की मस्जिद में विद्यमान है ।"

सैय्यद एवं लोदी काल में निर्मित कुछ वर्गाकृत मकबरे इस प्रकार है- बड़ा खाँ एवं छोटे खाँ का मकबरा, शीश गुम्बद, दादी का गुम्बद, पोली का गुम्बद एवं ताजखाँ के गुम्बद प्रसिद्ध हैं । पर्सी ब्राउन ने इस युग को मकबरों के युग' के नाम से सम्बोधित किया ।

"""""""""""""""" **धन्यवाद** """""""""""""""""

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)